# प्रेमचंद जयंती समारोह-2026
# रिपोर्ट

**हिंदी विभाग एवं उर्दू विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित**

**तारीख़** – 31 जुलाई 2026, शुक्रवार
**स्थान** – सेमिनार हॉल, सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय, भभुआ

# प्रेमचंद जयंती समारोह–31 जुलाई 2026
# सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय, भभुआ
# विषयः– प्रेमचंद और वर्तमान परिवेश

स्वागत भाषण/विषय प्रवर्तन :– डॉ0 रबीन्द्र कुमार (विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग)

वक्ता :– डॉ0 सैय्यद अशहद करीम ( विभागाध्यक्ष उर्दू विभाग)

मुख्य वक्ता :– श्री चंद्रजीत सिंह (समाजिक चिंतक/शिक्षा विद्)

अध्यक्षता :– डॉ0 शंकर प्रसाद शर्मा (प्राचार्य स0 व0 पटेल महाविद्यालय)

धन्यवाद ज्ञापन :– डॉ0 प्रियंका मिश्रा (हिन्दी विभाग स0 व0 पटेल महाविद्यालय)

मंच संचालन :– डॉ0 वंशीधर उपाध्याय (हिन्दी विभाग स0 व0 पटेल महाविद्यालय)

स्थान – सेमिनार हॉल – सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय, भभुआ

दिनांक–31 जुलाई 2026 (शुक्रवार)

समय–11:00 पूर्वाह्न

इस कार्यक्रम में आप सभी का हार्दिक स्वागत है–

| \S.N | CONTENTS | PAGE Nos. |
|---|---|---|
| 1. | Detailed Program Reoport | 04-05 |
| 2. | Attandance | 06-12 |
| 3. | Photographs and Newspaper Cutting | 13-25 |

# सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय
# हिंदी विभाग
# प्रेमचंद जयंती समारोह 2026

दिनांक 31 जुलाई 2026 को सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय में प्रेमचंद जयंती आयोजित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत प्रेमचंद की प्रतिमा पर माल्यार्पण से शुरू हुआ। इस जयंती समारोह सत्र संयोजक डॉ. वंशीधर उपाध्याय ने  प्रेमचंद के जीवन का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि बचपन का नाम धनपत राय था। जब उनकी लेखनी पर अंग्रेजी शासन द्वारा पाबंदी लगा दिया गया तब उनका नाम बदलकर प्रेमचंद पड़ा। बाद में हंस पत्रिका के सम्पादक बनने के बाद कैसे मुंशी प्रेमचंद हुए इसको बताया। आगे कहा कि प्रेमचंद ने साहित्य और समाज के मयार को बदलने का काम किया। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. शंकर प्रसाद शर्मा ने कहा कि आधुनिक युग में हिंदी और उर्दू साहित्य के उत्थान में प्रेमचंद ने वही काम किया जो मध्यकाल में संत कवियों ने किया था। भारतीय समाज को नैतिक पतन होने से बचाने का काम प्रेमचंद के साहित्य ने किया। आज भी भारतीय समाज को उपभोक्तावादी और अवसरवादी मनोवृत्ति से बचाने का काम प्रेमचंद का साहित्य कर रहा है। इस जयंती समारोह के मुख्य वक्ता श्री चंद्रजीत सिंह ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य हमें सत्य के खड़ा होने का साहस देता है। उन्होंने पंच परमेश्वर कहानी की व्याख्या करते हुए बताया कि महावीर प्रसाद द्विवेदी कैसे नाम रखा।जब मनुष्य निरीह हो जाता है तो वह न्यायालय के पास जाता है या तो परमेश्वर के पास इसी लिए इस कहानी का नाम पंचायत से पंचपरमेश्वर रखा गया। मनोविज्ञान विभाग के नियाज अहमद सिद्दीकी ने प्रेमचंद साहित्य में निहित मनोविज्ञान के तत्व की बारीकियों को रेखांकित किया। उर्दू विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सैय्यद अशहद करीम ने प्रेमचंद को साझी संस्कृति और बिरासत का रचनाकार बताया। प्रेमचंद की कहानी कफ़न की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि मनुष्य के भीतर से इन्सानियत कैसी मर रही है उसको बहुत बारीकी से दिखाया है। विषय प्रवर्तन करते हुए हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष

वर्तमानम समय के नवपूँजीवादी व्यवस्था की खामियों को 1936 में ही प्रेमचंद ने रेखांकित कर दिया था। अंग्रेजों की समय की न्याय व्यवस्था एवं पुलिस व्यवस्था की जो कमियां है वह आज भी कहीं ना कहीं किसी रूप में प्रलक्षित हो रही हैं जिनको प्रेमचंद ने अपने साहित्य में दर्शाया है। डॉ. सीमा सिंह ने ईदगाह कहानी को माध्यम से बताया कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जमाने में भी है हामिद का चिमटा रुस्तमे–ए–हिन्द बना रहेगा। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए डॉ. प्रियंका मिश्रा ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य ज्ञान का वह मंदिर है जहाँ प्रवेश करने के बाद हमे हर बार एक नई ऊर्जा मिलती है। इस जयंती समारोह में डॉ.अखिलेश नाथ तिवारी डी.अन्नपूर्णा गुप्ता, डॉ.भूपेंद्र शुक्ला डॉ. मीरा कुमारी, डॉ. केश्वर भारती, डॉ. आनंद प्रकाश, डॉ. अजीत राय, डॉ संगीता सिंह इंजीनियर नूतन कुमारी, ओमप्रकाश सिंह, पंकज कुमार, आदित्या कुमार, गौरव, सत्यम, ओमप्रकाश, अनिकेश, प्रिया, रबीता,महाविद्यालय सभी प्राध्यापक, कर्मचारी और छात्र-छात्राओं की उपस्थिति रही।

निबंध लेखन प्रतियोगिता।

प्रेमचंद जयंती की पूर्व संध्या पर हिंदी विभाग की प्राध्यापिका डॉक्टर प्रियंका मिश्रा के संयोजन में एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में लगभग 70 बच्चों ने प्रतिभा किया। यह निबंध प्रतियोगिता हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में लिखित रूप से ईदगाह कहानी की समीक्षा पर लिया गया। इसमें तीन हिंदी भाषा से और तीन उर्दू भाषा से बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

# प्रेमचंद जयंती समारोह -2026

## निबंध प्रतियोगिता

आज दिनांक 30 जुलाई 2026 को (प्रेमचंद जयंती की पूर्व संध्या पर) को हिंदी विभाग द्वारा महा० के छात्र - छात्राओं के लिए एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। यह प्रतियोगिता बच्चों के बीच साहित्य और मौलिक लेखन को बढ़ावा देने के लिए आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में हिंदी - विभाग के निम्नलिखित अध्यापक और महाविद्यालय के छात्र - छात्राएँ उपस्थित रही।

1. डॉ. रवीन्द्र कुमार - हिन्दी विभाग [signature]
2. डॉ. वंशीधर उपाध्याय हिंदी विभाग [signature]
3. डॉ. प्रियंका कुमारी मिश्रा हिन्दी विभाग [signature] 30/7/26
4. डॉ. संगीता सिंह इतिहास विभाग [signature]
5. अर्चना कुमारी (शोधार्थी) हिन्दी विभाग [signature]
6. गौरव कुमार (शोधार्थी) इतिहास विभाग Gaurav,
7.
8. Sanjana kumari
9. JUHI PARWEEN
10. Ruhi Kumari
11. साबिया परवीन
12. Naushin Naz
13. Yasmin naz
14. Pinki Kumari
15. Prity Kumari
16. Priti kumari
17. Riya kumari
18. Sabiha parveen
19. Priya Kumari
20. Sakshi Pandey

21. Ashana Kumari Astha
22. Falak Irfan
23. Sameera anwar
24. Zara praveen
25. Fija Bano
26. Sakshi Kumari
27. Priya kumari
28. gudiya kumari
29. Suraj Thakur
30. Satyam kumar
31. Taifer [illegible]
32. Sanskar kumar Soni.
33. Nitu Kamari
34 Khushbu Kumari
35. Juhi khatoon
36. Jyoti kumari
37 ayushi kumari
38. Bhoomika Pandey
39. Riya Jaiswal
40. Pratima kumari
41. Savita kumari
42. Kajal kumari
43. Kritika Kumari
44. Amritesh kumar
45. Hariom Kumar
46. Ashutosh Kumar
47. Kunal. Maurya
48. wahida khatun
49. Sania Khatoon

51. HARISHCHAND KUMAR
52. Dheeraj Kumar
53. Shivansh. kumar
54. Abhishek kumar
55. Anikesh Tiwari
56. Nitish Kumar
57. Chanchal Kumar
58. Khushi kumari
59. Shakti kumari
60. Samiksha Kumari

# प्रेमचंद जयंती समारोह - 2026

## विषय - प्रेमचंद और वर्तमान परिवेश

आज दिनांक 31 जुलाई 2026 को हिंदी विभाग द्वारा प्रेमचंद जयंती समारोह आयोजित किया गया। इस जयंती समारोह के मुख्य वक्ता प्रखर सामाजिक चिंतक व शिक्षाविद् श्री चंद्रजीत सिंह जी रहे। इस जयंती समारोह की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शंकर प्रसाद शर्मा ने किया। इस जयंती समारोह के माध्यम से विभाग और महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों और छात्रों ने प्रेमचंद के साहित्यिक अवदान को रेखांकित किया। इस जयंती समारोह में निम्नलिखित आगंतुक अतिथियों, प्राध्यापकों और छात्र-छात्राओं की उपस्थिति रही।

Dr. Rabindra Kumar. Hindi

1. Prof Shanker Pd. Sharma (Principal) 31/07/26
2. Dr. Syed Ashhad Karim (Urdu)
3. Dr. Neyaz Ahmad Siddique (PSY.)
4. Sheo Pujan Singh Retd SDM & Director Oxford School
5. Chandrajeet Sinh. Mohania
6. Dr Anand Prakash Zoology
7. Keshwar Pd. Bharti, Pol. Sci
8. Dr Sangeeta Singh, Hist.
9. Dr. Seema Singh Psy.
10. Er Nutan Kumari Biotech
11. Rabita kumari
12. Sudhanshu Kumari शोधार्थी
13. माधुरी कुमारी शोधार्थी MK.
14. डॉ. भूपेन्द्र शुक्ल दर्शनशास्त्र विभाग
15. डॉ. [illegible] हिंदी विभाग
16. डॉ. प्रियंका कुमारी मिश्रा हिन्दी विभाग

17. Kunal Maurya. Botany
18. Amritesh kumar - Political Science
19. Priya kumari - Political science
20. Sakshi Pandey - Political Science
21. Mahima Kumari Hindi
22. Khushbu Kumari - Botany
23. Juhi khatoon - History
24. Priya kumari — MJC Hindi
25. Riya Jaiswal - MJC - English
26. Supriya Kumari - MJC - Hindi
27. Smriti kumari - MJC - HINDI
28. Sunita kumari - MJC - Hindi
29. Savita Kumari - MJC - History
30. Pratima Kumari - MJC - History
31. Kajal Kumari - MJC - Hindi
32. Sakshi kumari - MJC - political science
33. sujata kumari - MJC - geography
34. Riti Kumari - MJ.C - Hindi
35. Ashana Kumari - MJC - Philosiphy.
36. Sandhya Kumari - MJC - Hindi
37. Ayushi kumari MJC - History
38 Prity Kumari — MJC — Zoology
39. Sanjana kumari - MJC - Physics
40. Jyoti kumari - MJC - mathematics
41. Falak Irfan - MJC - Urdu
42 Sameera anwar - MJC - urdu
43 Vikrant Kumar - MJC - ECO
44. Ajeet ku MJC -
45

45. Nayan Khatun MJC. Hindi semester-IV
46. Priya Kumari MJC. Hindi semester-IV
47. Arvind Kr - MJC Hindi
48. Krishna Kumar -
49. Abhishek Sharma
50. Satyam Kumar
51. Anikesh Tiwari — MJC - HINDI
52. Sonelal Kumar. - MJC - Hindi
53. Niranjan Raj - MJC - Hindi
54. Shubham-Pandey - MJC - Hindi
55. SANNI DEVAL KUMAR - MJC - HINDI
56. Baldau Kumar - MJC - Hindi
57. Shivansh Kumar - MJC. POL. Science
58. Sunny Thakur - MJC - English
59. Puja Kumari - MJC - Hindi
60. Priyanka Kumari - MJC - Hindi
61. Abhay Kumar - MJC - Geography
62. Hariom Kumar - MJC Botany
63. Chanchal Kumar - MJC - Political Science.
64. Nitish Kumar MJC Political Science
65. Dheeraj Kumar MJC HINDI
66. Harishchand Kumar MJC - Hindi
67. Abhishek Kumar MJC = History
68. Roma kumari MJC - English
69. Shikha Kumari MJC - English
70. Nitu kumari MJC - Hindi
71. Durga kumari MJC - Hindi
72. Gudi kumari MJC - Hindi
73. Khusbu kumari MJC - Hindi

| | | | |
|---|---|---|---|
| 74. | Kritika Kumari | MJC | Hindi |
| 75. | Raushani kumari | MJC | Hindi |
| 76. | Abhishek Kumar | MJC | Hindi |
| 77. | Satyam kumar | MJ. | Mathematics |
| 78. | [illegible] | MJC | URDU |
| 79. | संस्कार कुमार सोनी | MJC | Physics. |
| 80 | Shakti kumari (VI) | MJC | Hindi |
| 81 | Naushin Naz | MJC | URDU |
| 82 | Yasmin naz | MJC | URDU |
| 83 | nidhi kumari | MJC | Geography. |
| 84 | Madhu kumarie (Sem-VII) | MJC | Hindi |
| 85. | Manisha kumari (Sem-VII) | MJC | HINDI |
| 86 | Sabiha parveen (semVII) | MJC | urdu |
| 87 | Juli parveen (SemVII) | MJC | History |
| 88 | [illegible] (semVII) | MJC | Urdu |
| 89 | Bhoomika Pandey | MJC | English |
| 90 | Neha kumari (SemIII) | MJC | Psychology |
| 91 | Aarti kumari (Sem III) | MJC | Psychology |
| 92. | Ritika kumari (Sem III) | MJC | Psychology |
| 93. | Anil kumar (Sem-V) | MJC | Psychology. |
| 94. | Samiksha kumari (Sem - VII) | MJC | Hin |
| 95. | Sumesh kumar (Sem-V) | MJC | PSY |

सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय, भभुआ
हिंदी-उर्दू विभाग के संयुक्त तत्वाधान में
प्रेमचंद जयंती समारोह
Shot by आDitya
realme 9 5G 2026 07 31 14:45

सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय, भभुआ
(वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा की अंगीभूत इकाई) भभुआ, कैमूर, बिहार
हिंदी-उर्दू विभाग के संयुक्त तत्वाधान में
प्रेमचंद जयंती समारोह
विषय- प्रेमचंद और वर्तमान परिवेश
अध्यक्ष-
डॉ0 शंकर प्रसाद शर्मा
प्राचार्य
(सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय, भभुआ)
31 जुलाई 2026, शुक्रवार
11 बजे पूर्वाह्न
सेमिनार हॉल, सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय, भभुआ
संयोजक-
हिंदी-उर्दू विभाग
(सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय, भभुआ)

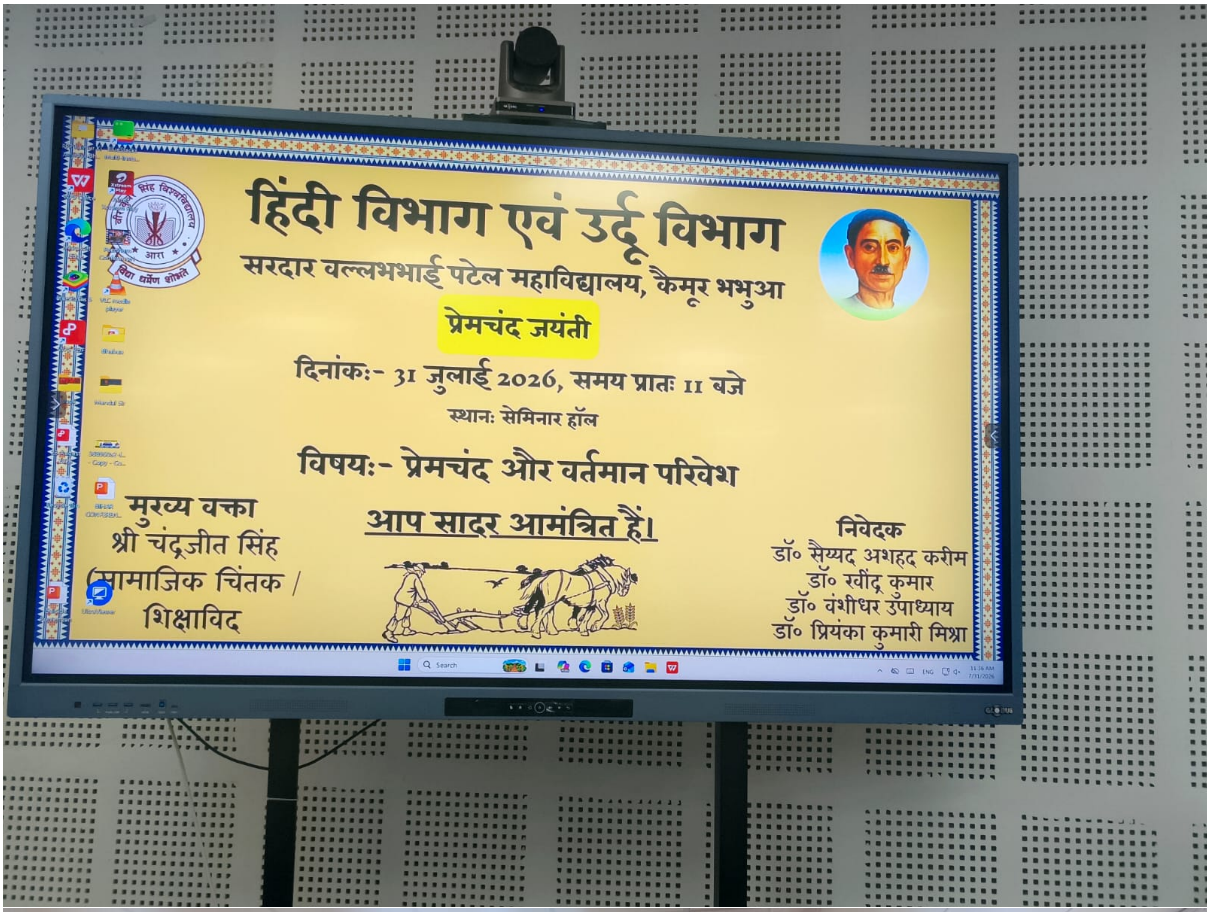
हिंदी विभाग एवं उर्दू विभाग
सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय, कैमूर भभुआ
प्रेमचंद जयंती
दिनांकः- 31 जुलाई 2026, समय प्रातः 11 बजे
स्थानः सेमिनार हॉल
विषयः- प्रेमचंद और वर्तमान परिवेश
आप सादर आमंत्रित हैं।
मुख्य वक्ता
श्री चंद्रजीत सिंह
(सामाजिक चिंतक /
शिक्षाविद
निवेदक
डॉ० सैय्यद अशहद करीम
डॉ० रवींद्र कुमार
डॉ० वंशीधर उपाध्याय
डॉ० प्रियंका कुमारी मिश्रा

SEMINAR HALL
SARDAR VALLABHBHAI PATEL COLLEGE
BHABUA, KAIMUR (BIHAR) - 821101
GPS Map Camera
Google
दमदम, बिहार, भारत
2jm2+r5j, Vip कॉलोनी, दमदम, बिहार 821101, भारत
Lat 25.034628° Long 83.600356°
शुक्रवार, 31/07/2026 11:40 AM GMT +05:30

हिंदी-उर्दू विभाग के संयुक्त तत्वावधान में
प्रेमचंद जयंती समारोह
अध्यक्ष
डॉ0 शंकर प्रसाद शर्मा
प्राचार्य
शिक्षक
GPS Map Camera
Google
दमदम, बिहार, भारत
2jm2+r5j, Vip कॉलोनी, दमदम, बिहार 821101, भारत
Lat 25.03459° Long 83.60037°
शुक्रवार, 31/07/2026 12:39 PM GMT +05:30

शिक्षक
GPS Map Camera
Google
दमदम, बिहार, भारत
2jm2+r5j, Vip कॉलोनी, दमदम, बिहार 821101, भारत
Lat 25.034584° Long 83.600323°
शुक्रवार, 31/07/2026 11:58 AM GMT +05:30

सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय,
(वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा की अंगीभूत इकाई) भभुआ, कैमूर, बिहार
हिंदी-उर्दू विभाग के संयुक्त तत्वाधान में
प्रेमचंद जयंती समारोह
GPS Map Camera
दमदम, बिहार, भारत
2jm2+r5j, Vip कॉलोनी, दमदम, बिहार 821101, भारत
Lat 25.034622° Long 83.600357°
शुक्रवार, 31/07/2026 12:07:13 PM GMT +05:30
Google

हिंदी विभाग एवं उर्दू विभाग
सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय, कैमूर भभुआ
प्रेमचंद जयंती
दिनांक:- 31 जुलाई 2026, समय प्रातः 11 बजे
GLOBUS
GPS Map Camera
दमदम, बिहार, भारत
2jm2+r5j, Vip कॉलोनी, दमदम, बिहार 821101, भारत
Lat 25.03462° Long 83.600356°
शुक्रवार, 31/07/2026 01:23 PM GMT +05:30
Google

SEMINAR HALL
SARDAR VALLABHBHAI PATEL COLLEGE
BHABUA, KAIMUR (BIHAR) - 821101
GPS Map Camera
दमदम, बिहार, भारत
2jm2+r5j, Vip कॉलोनी, दमदम, बिहार 821101, भारत
Lat 25.034537° Long 83.599968°
शुक्रवार, 31/07/2026 11:58 AM GMT +05:30
Google

हिंदी विभाग एवं उर्दू विभाग
सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय, कैमूर भभुआ
प्रेमचंद जयंती
दिनांक:- 31 जुलाई 2026, समय प्रातः 11 बजे
स्थान: सेमिनार हॉल
विषय:- प्रेमचंद और वर्तमान परिवेश
निवेदक
GLOBUS
GPS Map Camera
दमदम, बिहार, भारत
2jm2+r5j, Vip कॉलोनी, दमदम, बिहार 821101, भारत
Lat 25.03462° Long 83.600356°
शुक्रवार, 31/07/2026 01:23 PM GMT +05:30
Google

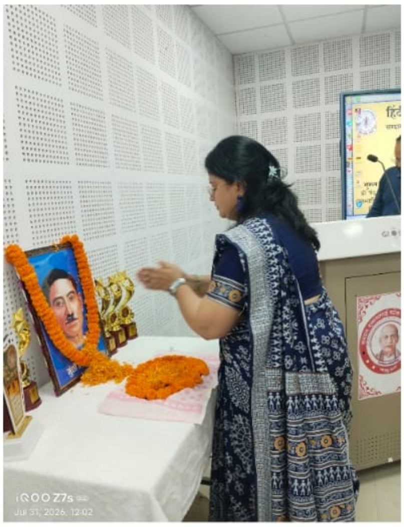

SEMINAR HALL
SARDAR VALLABHBHAI PATEL COLLEGE
BHABUA, KAIMUR (BIHAR) - 821101
(A CONSTITUENT UNIT OF V.K.S.U., ARA)
Accredited by NAAC- "B" Grade
Supported Under DBT-STAR College Program
iQOO Z7s 5G
Jul 31, 2026, 12:07

सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय, भभु
(वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा की अंगीभूत इकाई) भभुआ, कैमूर, बिहार
हिंदी-उर्दू विभाग के संयुक्त तत्वाधान में
प्रेमचंद जयंती समारोह
विषय- प्रेमचंद और वर्तमान परिवेश
डॉ0 शंकर प्रसाद शर्मा
प्राचार्य
31 जुलाई 2026, शुक्रवार
11 बजे पूर्वाह्न
सेमिनार हॉल, सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय, भभुआ
संयोजक
हिंदी-उर्दू विभाग
प्रेमचंद
iQOO Z7s 5G
Jul 31, 2026, 12:10

सरदार वल्लभभाई पटेल म
हिंदी-उर्दू विभाग के संयुक्त
प्रेमचंद जयंती

SEMINAR HALL
SARDAR VALLABHBHAI PATEL COLLEGE

हिंदी विभाग एवं उर्दू विभाग

सरदार वल्लभभाई पटेल म
हिंदी-उर्दू विभाग के संयुक्त
प्रेमचंद जयंती

SEMINAR HALL
SARDAR VALLABHBHAI PATEL COLLEGE

सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय,
हिंदी-उर्दू विभाग के संयुक्त तत्वाधान में
प्रेमचंद जयंती समारोह

# सरदार पटेल कॉलेज में धूमधाम से मनाई गई प्रेमचंद जयंती, साहित्य को बताया समाज का दर्पण

संवाददाता

**भभुआ/कैमूर।** सरदार वल्लभाई पटेल महाविद्यालय में गुरुवार को प्रेमचंद जयंती धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत प्रेमचंद की प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुई।

**प्रेमचंद ने बदला साहित्य और समाज का मयार**

सत्र संयोजक डॉ. वंशीधर उपाध्याय ने प्रेमचंद के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उनका बचपन का नाम धनपत राय था। अंग्रेजी शासन द्वारा लेखनी पर पाबंदी लगने के बाद नाम बदलकर प्रेमचंद पड़ा। बाद में हंस पत्रिका के संपादक बनने के बाद वे मुंशी प्रेमचंद कहलाए।उन्होंने कहा कि प्रेमचंद ने साहित्य और समाज के मयार को बदलने का काम किया।

**आधुनिक युग के संत कवि थे प्रेमचंद**

अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. शंकर प्रसाद शर्मा ने कहा कि आधुनिक युग में हिंदी और उर्दू साहित्य के उत्थान में प्रेमचंद ने वही काम किया जो मध्यकाल में संत कवियों ने किया था।उन्होंने कहा कि भारतीय समाज को नैतिक पतन से बचाने का काम प्रेमचंद के साहित्य ने किया है। आज भी उपभोक्तावादी और अवसरवादी मनोवृत्ति से बचाने का काम उनका साहित्य कर रहा है।

**सत्य के लिए खड़ा होने का साहस देते हैं प्रेमचंद**

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री इन्द्रजीत सिंह ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य हमें सत्य के लिए खड़ा होने का साहस देता है। उन्होंने पंच परमेश्वर कहानी की व्याख्या करते हुए बताया कि जब मनुष्य निरीह हो जाता है तो वह न्यायालय या परमेश्वर के पास जाता है, इसलिए इस कहानी का नाम पंचायत से पंचपरमेश्वर रखा गया।

**कफ़न और ईदगाह पर विशेष चर्चा**

उर्दू विभागाध्यक्ष डॉ. सैय्यद अशहद करीम ने प्रेमचंद को साझी संस्कृति और विरासत का रचनाकार बताया। कफ़न कहानी की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि मनुष्य के भीतर इंसानियत कैसे मर रही है, इसे प्रेमचंद ने बहुत बारीकी से दिखाया है। हिंदी विभागाध्यक्ष ने विषय प्रवर्तन में कहा कि वर्तमान नवपूंजीवादी व्यवस्था की खामियों को प्रेमचंद ने 1936 में ही रेखांकित कर दिया था। अंग्रेजों के समय की न्याय और पुलिस व्यवस्था की कमियां आज भी किसी न किसी रूप में दिख रही हैं। डॉ. सीमा सिंह ने ईदगाह कहानी के माध्यम से कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जमाने में भी हामिद का चिमटा रुस्तम-ए-हिंद बना रहेगा।

**मनोविज्ञान और धन्यवाद**

मनोविज्ञान विभाग के नियाज अहमद सिद्दीकी ने प्रेमचंद साहित्य में निहित मनोविज्ञान के तत्वों को रेखांकित किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रियंका मिश्रा ने किया। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य ज्ञान का वह मंदिर है जहां प्रवेश करने के बाद हर बार नई ऊर्जा मिलती है।

---

दैनिक भास्कर   सासाराम / कैमूर भास्कर   30-07-2026

**जयंती** • एसवीपी कॉलेज,भभुआ में कल आयोजित होगी प्रेमचंद और वर्तमान परिवेश पर संगोष्ठी

# प्रेमचंद का साहित्य समूचे विश्व और मानवता के लिए धरोहर

भास्कर न्यूज|भभुआ

सरदार वल्लभ भाई पटेल महाविद्यालय में हिंदी उर्दू विभाग के संयुक्त तत्वावधान में कल शुक्रवार 31 जुलाई को 11 बजे दिन में प्रेमचंद जयंती मनाई जाएगी। इस बारे में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.शंकर प्रसाद शर्मा ने कहा कि प्रेमचंद जैसे प्रसिद्ध साहित्यकार की जयंती मनाने के लिए हिंदी उर्दू विभाग के सभी शिक्षकों को शुभकामनाएं देता हूं। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद ने साहित्य के माध्यम से भारतीय जीवन के वास्तविक स्थिति को दर्शाया है। प्रेमचंद का साहित्य मनुष्यता के जयघोष का साहित्य है। प्राचार्य ने इस कार्यक्रम में नगर के सभी साहित्य प्रेमियों आमंत्रित किया। इस कार्यक्रम के विवरण देते हुए हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.रबींद्र कुमार ने बताया कि प्रत्येक वर्ष विभाग द्वारा यह जयंती मनाई जाती है। प्रेमचंद ने जिस समताम्मूलक समाज की स्थापना का स्वप्न देखा था,उसे साकार करना हर व्यक्ति का लक्ष्य होना चाहिए। प्रेमचंद ने साहित्य के मयार को बदलने का काम किया। उनकी प्रासंगिकता को देखते हुए ही इस वर्ष संगोष्ठी का विषय प्रेमचंद और वर्तमान परिवेश हैं।

कार्यक्रम की तैयारी पर चर्चा करते

**प्रेमचंद का साहित्य मानवता के लिए धरोहर :** हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ.वंशीधर उपाध्याय ने बताया कि इस बार मुख्य वक्ता के रूप में प्रखर सामाजिक चिंतन चंद्रजीत सिंह को बुलाया जा रहा है।

चंद्रजीत सिंह ने मोहनियां में लगातार 20 वर्षों से प्रेमचंद जयंती आयोजित करते रहे हैं।इस वर्ष का विषय प्रेमचंद और वर्तमान परिवेश प्रेमचंद को नए रूप से पढ़ने और समझने के लिए छात्रों को नई दृष्टि मिलेगी।उर्दू विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ सैय्यद अशहद करीम में बताया की प्रेमचंद के साहित्य में जीवनानुभूतियों का जितना संघन और जीवंत वर्णन है उसे पढ़ा जाना चाहिए।प्रेमचंद जैसे रचनाकार को किसी जाति,धर्म और भाषा के दायरे में नहीं रखा जा सकता है। उनका साहित्य समूचे विश्व और मानवता के लिए धरोहर है।

**भास्कर इनसाइट**

## आज प्रेमचंद विषयक निबंध प्रतियोगिता

हिंदी विभाग की प्राध्यापिका डॉ.प्रियंका मिश्रा ने कहा कि हिंदी साहित्य के लिए यह गर्व का विषय है कि उस साहित्य में प्रेमचंद जैसे रचनाकार हैं।प्रेमचंद को हम जितनी बार पढ़ते हैं हर बार कुछ नई दृष्टि हमें मिलती हैं।उन्होंने भभुआ के सभी साहित्यिक प्रेमी और पत्रकार बंधुओं को इस कार्यक्रम में सादर आमंत्रित किया।प्रेमचंद जयंती की पूर्व संध्या पर डॉ.प्रियंका मिश्रा के संयोजन सरदार पटेल महाविद्यालय में प्रेमचंद विषयक एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई है।

भभुआ (कैमूर) H...
ehindustan.com

हिन्दुस्तान भभुआ (कैमूर) 30 जुलाई 2026 Alauddin Azizi

# पटेल कॉलेज में आज प्रतियोगिता और कल मनेगी प्रेमचंद जयंती

**भभुआ, नगर संवाददाता।** शहर के सरदार वल्लभ भाई पटेल कॉलेज में प्रेमचंद जयंती की पूर्व संध्या पर गुरुवार को निबंध प्रतियोगिता एवं शुक्रवार को जयंत मनाई जाएगी। प्रतियोगिता में प्रथम तीन प्रतिभागियों को 31 जुलाई को जयंती समारोह में सम्मानित किया जाएगा। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शंकर प्रसाद शर्मा ने कहा कि मुंशी प्रेमचंद साहित्य के माध्यम से भारतीय जीवन की वास्तविक स्थिति को दर्शाया है।

उनके द्वारा कार्यक्रम में साहित्य प्रेमियों आमंत्रित किया गया है। हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रबींद्र कुमार ने बताया कि प्रेमचंद ने जिस समतामूलक समाज की स्थापना का स्वप्न देखा था, उसे साकार करना हर व्यक्ति का लक्ष्य होना चाहिए। हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ. वंशीधर उपाध्याय ने बताया कि इस बार मुख्य वक्ता के रूप में प्रखर सामाजिक चिंतक चंद्रजीत सिंह को आमंत्रित किया जा रहा है। वह 2[illegible] वर्षों से मोहनियां में प्रेमचंद जयंती आयोजित करते रहे हैं। प्रेमचंद को नए रूप से पढ़ने और समझने के लिए छात्रों को नई दृष्टि मिलेगी। उर्दू विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सैय्यद अशहद करीम में बताया कि प्रेमचंद के साहित्य में जीवनानुभूतियों का जितना संघन और जीवंत वर्णन है उसे पढ़ा जाना चाहिए।

- प्रतियोगिता के सफल प्रतिभागियों को किया जाएगा पुरस्कृत
- कॉलेज का हिन्दी और उर्दू विभाग संयुक्त रूप से आयोजित करेगा कार्यक्रम

हिन्दी दैनिक
आशंका बुलेटिन
Email-ashankabulletin000@gmail.com
उत्तर प्रदे

# पटेल कॉलेज में 31 जुलाई को मनाई जाएगी प्रेमचंद जयंती, प्रेमचंद और वर्तमान परिवेश पर होगी संगोष्ठी

संवाददाता

**भभुआ (कैमूर)।** सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय, भभुआ के हिंदी एवं उर्दू विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 31 जुलाई 2026 को प्रात: 11 बजे महान कथाकार एवं उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयंती श्रद्धा एवं सम्मान के साथ मनाई जाएगी। इस अवसर पर 卐प्रेमचंद और वर्तमान परिवेश卐 विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा, जिसमें साहित्यकार, शिक्षक, छात्र-छात्राएं एवं नगर के साहित्य प्रेमी भाग लेंगे।

**प्राचार्य ने किया साहित्य प्रेमियों का स्वागत**

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शंकर प्रसाद शर्मा ने कार्यक्रम की जानकारी देते हुए हिंदी-उर्दू विभाग के सभी शिक्षकों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज के यथार्थ, संघर्ष, शोषण और मानवीय संवेदनाओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उनका साहित्य मानवता, समानता और सामाजिक न्याय का संदेश देता है। उन्होंने नगर के सभी साहित्य प्रेमियों से कार्यक्रम में अधिकाधिक संख्या में शामिल होने की अपील की।

**समतामूलक समाज की स्थापना का संदेश**

हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. रवींद्र कुमार ने बताया कि महाविद्यालय में प्रत्येक वर्ष प्रेमचंद जयंती का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष संगोष्ठी का विषय प्रेमचंद और वर्तमान परिवेश रखा गया है। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद ने जिस समतामूलक समाज का सपना देखा था, उसे साकार करने की जिम्मेदारी आज के समाज की है। वहीं डॉ. वंशीधर उपाध्याय ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रखर सामाजिक चिंतक श्री चंद्रजीत सिंह होंगे, जो मोहनियां में पिछले दो दशकों से लगातार प्रेमचंद जयंती का आयोजन करते आ रहे हैं।

**30 जुलाई को होगी निबंध प्रतियोगिता**

उर्दू विभागाध्यक्ष डॉ. सैय्यद अशहद करीम ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य किसी एक भाषा, जाति या धर्म तक सीमित नहीं है, बल्कि संपूर्ण मानवता की अमूल्य धरोहर है। डॉ. प्रियंका मिश्रा ने कहा कि प्रेमचंद की रचनाएं हर बार पढ़ने पर नई दृष्टि और नई प्रेरणा प्रदान करती हैं। जयंती की पूर्व संध्या पर 30 जुलाई को सुबह 11 बजे महाविद्यालय में प्रेमचंद विषयक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी, जिसका संयोजन डॉ. प्रियंका मिश्रा करेंगी। प्रतियोगिता के प्रथम तीन विजेताओं को 31 जुलाई को आयोजित मुख्य समारोह में सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जाएगा। यह आयोजन विद्यार्थियों में साहित्यिक चेतना और प्रेमचंद के विचारों के प्रति रुचि विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है।

भभुआ (कैमूर) H...
ehindustan.com

हिन्दुस्तान
August 01, 2026
Alauddin Azizi

भभुआ शहर के सरदार वल्लभ भाई पटेल कॉलेज में प्रेमचंद जयंती पर साहित्य और समाज की वर्तमान चुनौतियों पर चर्चा

# 'प्रेमचंद ने हमारे समाज के मापदंड को भी बदला'

**भभुआ, नगर संवाददाता।** शहर के सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय में शुक्रवार को प्रेमचंद जयंती समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महान साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद को श्रद्धांजलि देने के साथ की गई। साहित्यिक परिचर्चा में वक्ताओं ने प्रेमचंद के व्यक्तित्व, कृतित्व और वर्तमान समय में उनकी प्रासंगिकता पर विस्तार से विचार रखे।

सत्र संयोजक डॉ. वंशीधर उपाध्याय ने प्रेमचंद के जीवन का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि उनका बचपन का नाम धनपत राय था। अंग्रेजी शासन के दौरान उनकी लेखनी पर प्रतिबंध लगाए जाने के बाद वे 'प्रेमचंद' नाम से लिखने लगे। बाद में 'हंस' पत्रिका के संपादन से उनकी पहचान और मजबूत हुई तथा वह मुंशी प्रेमचंद के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद ने साहित्य के साथ समाज के मापदंड को भी बदलने का काम किया और आम आदमी के दुख-दर्द को रचनाओं के केंद्र में रखा।

अध्यक्षीय संबोधन में प्राचार्य डॉ. शंकर प्रसाद शर्मा ने कहा कि आधुनिक युग में हिन्दी और उर्दू साहित्य के उत्थान में प्रेमचंद ने वही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो मध्यकाल में संत कवियों ने निभाई थी। उनका साहित्य भारतीय समाज को नैतिक रूप से पतित होने से बचाने वाला रहा। आज जब समाज उपभोक्तावादी और अवसरवादी मानसिकता से प्रभावित हो रहा है, ऐसे समय में भी प्रेमचंद की रचनाएं इंसानियत, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी की सीख देती हैं। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य केवल अपने समय का चित्रण नहीं करता, बल्कि आज की सामाजिक परिस्थितियों में भी उतनी ही मजबूती से प्रासंगिक दिखाई देता है।

सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय में शुक्रवार को प्रेमचंद जयंती पर पोस्टर का विमोचन करते प्राचार्य डॉ. एसपी शर्मा व अन्य।

**'पंच परमेश्वर' सत्य और न्याय के साथ खड़े होने की प्रेरणा :** मुख्य वक्ता साहित्यकार इंद्रजीत सिंह ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य मनुष्य को सत्य के साथ खड़े होने का साहस देता है। 'पंच परमेश्वर' कहानी की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि जब मनुष्य स्वयं को निरीह पाता है तब वह न्याय के लिए न्यायालय या परमेश्वर की शरण में जाता है। कहानी में पंचायत और पंच के माध्यम से न्याय की इसी भावना को सामने रखा गया है। मनोविज्ञान विभाग के डॉ. नियाज अहमद सिद्दीकी ने प्रेमचंद की रचनाओं में छिपे मनोवैज्ञानिक पक्षों की बारीकियों को सामने रखा। उर्दू विभागाध्यक्ष डॉ. सैय्यद अशहद करीम ने प्रेमचंद को साझी संस्कृति और साझा विरासत का रचनाकार बताया।

**'कफन' में मरती इंसानियत का सजीव चित्रण :** डॉ. सैय्यद अशहद करीम ने 'कफन' कहानी की चर्चा करते हुए कहा कि प्रेमचंद ने मनुष्य के भीतर से धीरे-धीरे खत्म होती इंसानियत को बेहद बारीकी से चित्रित किया है।

हिन्दी विभागाध्यक्ष ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि वर्तमान नवपूंजीवादी व्यवस्था की कई खामियों को प्रेमचंद ने वर्ष 1936 में ही रेखांकित कर दिया था। अंग्रेजी शासन के दौर की न्याय और पुलिस व्यवस्था की कमियां आज भी किसी न किसी रूप में दिखाई देती हैं। प्रेमचंद ने इन विसंगतियों को अपने साहित्य में प्रभावी ढंग से सामने रखा। उनकी रचनाएं व्यवस्था के साथ-साथ समाज और व्यक्ति के भीतर मौजूद कमजोरियों पर भी सवाल खड़ा करती हैं।

## एआई के दौर में भी याद रहेगा हामिद का चिमटा

डॉ. सीमा सिंह ने 'ईदगाह' कहानी के माध्यम से कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में भी हामिद का चिमटा 'रुस्तमे-हिन्द' बना रहेगा। इसकी वजह उसमें छिपा त्याग, संवेदना और परिवार के प्रति प्रेम है। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए डॉ. प्रियंका मिश्रा ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य ज्ञान का ऐसा मंदिर है, जहां प्रवेश करने के बाद हर बार नई ऊर्जा और नई दृष्टि मिलती है। समारोह में डॉ. अखिलेश नाथ तिवारी, डॉ. अन्नपूर्णा गुप्ता, डॉ. भूपेंद्र शुक्ला, डॉ. मीरा कुमारी, डॉ. केश्वर भारती, डॉ. आनंद प्रकाश, डॉ. अजीत राय, डॉ. संगीता सिंह, इंजीनियर नूतन कुमारी, ओमप्रकाश सिंह, पंकज कुमार समेत अन्य प्राध्यापक, कर्मचारी व छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

## सरदार पटेल कॉलेज में धूमधाम से मनाई गई प्रेमचंद जयंती, साहित्य को बताया समाज का दर्पण

**अनुराग भारत संवाददाता / विनोद कुमार राम / भभुआ/कैमूर।** सरदार वल्लभाई पटेल महाविद्यालय में गुरुवार को प्रेमचंद जयंती धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम की शुरूआत प्रेमचंद की प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुई। सत्र संयोजक डॉ. वंशीधर उपाध्याय ने प्रेमचंद के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उनका बचपन का नाम धनपत राय था। अंग्रेजी शासन द्वारा लेखनी पर पाबंदी लगने के बाद नाम बदलकर प्रेमचंद पड़ा। बाद में हंस पत्रिका के संपादक बनने के बाद वे मुंशी प्रेमचंद कहलाए।उन्होंने कहा कि प्रेमचंद ने साहित्य और समाज के मयार को बदलने का काम किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. शंकर प्रसाद शर्मा ने कहा कि आधुनिक युग में हिंदी और उर्दू साहित्य के उत्थान में प्रेमचंद ने वही काम किया जो मध्यकाल में संत कवियों ने किया था।उन्होंने कहा कि भारतीय समाज को नैतिक पतन से बचाने का काम प्रेमचंद के साहित्य ने किया है। आज भी उपभोक्तावादी और अवसरवादी मनोवृत्ति से बचाने का काम उनका साहित्य कर रहा है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री इन्द्रजीत सिंह ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य हमें सत्य के लिए खड़ा होने का साहस देता है।उन्होंने पंच परमेश्वर कहानी की व्याख्या करते हुए बताया कि जब मनुष्य निरीह हो जाता है तो वह न्यायालय या परमेश्वर के पास जाता है, इसलिए इस कहानी का नाम पंचायत से पंचपरमेश्वर रखा गया। उर्दू विभागाध्यक्ष डॉ. सैय्यद अशहद करीम ने प्रेमचंद को साझी संस्कृति और विरासत का रचनाकार बताया। कफनकहानी की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि मनुष्य के भीतर इंसानियत कैसे मर रही है, इसे प्रेमचंद ने बहुत बारीकी से दिखाया है।

हिंदी विभागाध्यक्ष ने विषय प्रवर्तन में कहा कि वर्तमान नवपूंजीवादी व्यवस्था की खामियों को प्रेमचंद ने 1936 में ही रेखांकित कर दिया था। अंग्रेजों के समय की न्याय और पुलिस व्यवस्था की कमियां आज भी किसी न किसी रूप में दिख रही हैं। डॉ. सीमा सिंह ने ईदगाह कहानी के माध्यम से कहा कि आर्टिफिशियल इंटिलिजेंस के जमाने में भी हामिद का चिमटा रुस्तम-ए-हिंद बना रहेगा। मनोविज्ञान विभाग के नियाज अहमद सिद्दीकी ने प्रेमचंद साहित्य में निहित मनोविज्ञान के तत्वों को रेखांकित किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रियंका मिश्रा ने किया। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य ज्ञान का वह मंदिर है जहां प्रवेश करने के बाद हर बार नई ऊर्जा मिलती है। कार्यक्रम में डॉ. अखिलेश नाथ तिवारी, डॉ. अन्नपूर्णा गुप्ता, डॉ. भूपेंद्र शुक्ला, डॉ. मीरा कुमारी, डॉ. केश्वर भारती, डॉ. आनंद प्रकाश, डॉ. अजीत राय, डॉ. संगीता सिंह, इंजीनियर नूतन कुमारी, ओमप्रकाश सिंह, पंकज कुमार सहित सभी प्राध्यापक, कर्मचारी और बड़ी

रोहित

अनुराग भा
(रोहतास) शाह
एवं शिक्षा के क्षे
स्थापित करने व
भारतीय कायस्थ
का राष्ट्रीय महास
कायस्थ समाज
है। स्वामी विवेका
के लोगों ने इसे
बिहार के लिए गौ
अवसर पर समा
रजनीश कुमार वम
एवं शुभकामनाएँ दे
वर्षों के सामाजि
उल्लेखनीय योगद

भभुआ (कैमूर) H...
ehindustan.com

हिन्दुस्तान  August 01, 2026  Alauddin Azizi

### भभुआ शहर के सरदार वल्लभ भाई पटेल कॉलेज में प्रेमचंद जयंती पर साहित्य और समाज की वर्तमान चुनौतियों पर चर्चा

# ‘प्रेमचंद ने हमारे समाज के मापदंड को भी बदला’

**भभुआ, नगर संवाददाता।** शहर के सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय में शुक्रवार को प्रेमचंद जयंती समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महान साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद को श्रद्धांजलि देने के साथ की गई। साहित्यिक परिचर्चा में वक्ताओं ने प्रेमचंद के व्यक्तित्व, कृतित्व और वर्तमान समय में उनकी प्रासंगिकता पर विस्तार से विचार रखे।

सत्र संयोजक डॉ. वंशीधर उपाध्याय ने प्रेमचंद के जीवन का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि उनका बचपन का नाम धनपत राय था। अंग्रेजी शासन के दौरान उनकी लेखनी पर प्रतिबंध लगाए जाने के बाद वे 'प्रेमचंद' नाम से लिखने लगे। बाद में 'हंस' पत्रिका के संपादन से उनकी पहचान और मजबूत हुई तथा वह मुंशी प्रेमचंद के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद ने साहित्य के साथ समाज के मापदंड को भी बदलने का काम किया और आम आदमी के दुख-दर्द को रचनाओं के केंद्र में रखा। अध्यक्षीय संबोधन में प्राचार्य डॉ. शंकर प्रसाद शर्मा ने कहा कि आधुनिक युग में हिन्दी और उर्दू साहित्य के उत्थान में प्रेमचंद ने वही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो मध्यकाल में संत कवियों ने निभाई थी। उनका साहित्य भारतीय समाज को नैतिक रूप से पतित होने से बचाने वाला रहा। आज जब समाज उपभोक्तावादी और अवसरवादी मानसिकता से प्रभावित हो रहा है, ऐसे समय में भी प्रेमचंद की रचनाएं इंसानियत, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी की सीख देती हैं। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य केवल अपने समय का चित्रण नहीं करता, बल्कि आज की सामाजिक परिस्थितियों में भी उतनी ही मजबूती से प्रासंगिक दिखाई देता है।

सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय में शुक्रवार को प्रेमचंद जयंती पर पोस्टर का विमोचन करते प्राचार्य डॉ. एसपी शर्मा व अन्य।

**‘पंच परमेश्वर’ सत्य और न्याय के साथ खड़े होने की प्रेरणा :** मुख्य वक्ता साहित्यकार इंद्रजीत सिंह ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य मनुष्य को सत्य के साथ खड़े होने का साहस देता है। 'पंच परमेश्वर' कहानी की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि जब मनुष्य स्वयं को निरीह पाता है तब वह न्याय के लिए न्यायालय या परमेश्वर की शरण में जाता है। कहानी में पंचायत और पंच के माध्यम से न्याय की इसी भावना को सामने रखा गया है। मनोविज्ञान विभाग के डॉ. नियाज अहमद सिद्दीकी ने प्रेमचंद की रचनाओं में छिपे मनोवैज्ञानिक पक्षों की बारीकियों को सामने रखा। उर्दू विभागाध्यक्ष डॉ. सैय्यद अशहद करीम ने प्रेमचंद को साझी संस्कृति और साझा विरासत का रचनाकार बताया।

**‘कफन’ में मरती इंसानियत का सजीव चित्रण :** डॉ. सैय्यद अशहद करीम ने 'कफन' कहानी की चर्चा करते हुए कहा कि प्रेमचंद ने मनुष्य के भीतर से धीरे-धीरे खत्म होती इंसानियत को बेहद बारीकी से चित्रित किया है।

हिन्दी विभागाध्यक्ष ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि वर्तमान नवपूंजीवादी व्यवस्था की कई खामियों को प्रेमचंद ने वर्ष 1936 में ही रेखांकित कर दिया था। अंग्रेजी शासन के दौर की न्याय और पुलिस व्यवस्था की कमियां आज भी किसी न किसी रूप में दिखाई देती हैं। प्रेमचंद ने इन विसंगतियों को अपने साहित्य में प्रभावी ढंग से सामने रखा। उनकी रचनाएं व्यवस्था के साथ-साथ समाज और व्यक्ति के भीतर मौजूद कमजोरियों पर भी सवाल खड़ा करती हैं।

### एआई के दौर में भी याद रहेगा हामिद का चिमटा

डॉ. सीमा सिंह ने 'ईदगाह' कहानी के माध्यम से कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में भी हामिद का चिमटा 'रुस्तमे-हिन्द' बना रहेगा। इसकी वजह उसमें छिपा त्याग, संवेदना और परिवार के प्रति प्रेम है। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए डॉ. प्रियंका मिश्रा ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य ज्ञान का ऐसा मंदिर है, जहां प्रवेश करने के बाद हर बार नई ऊर्जा और नई दृष्टि मिलती है। समारोह में डॉ. अखिलेश नाथ तिवारी, डॉ. अन्नपूर्णा गुप्ता, डॉ. भूपेंद्र शुक्ला, डॉ. मीरा कुमारी, डॉ. केश्वर भारती, डॉ. आनंद प्रकाश, डॉ. अजीत राय, डॉ. संगीता सिंह, इंजीनियर नूतन कुमारी, ओमप्रकाश सिंह, पंकज कुमार समेत अन्य प्राध्यापक, कर्मचारी व छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।